अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब
"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"
से लिये गए मवाद की पहली क़िस्त

Imaan Par Khatima (Hindi)

ईमान पर ख़ातिमा

कुल सफ़ह़ात 38

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ط ط येह किताब शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ''उर्दू'' ज़बान में तह़रीर फ़रमाई है और मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)
+91 98987 32611
E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ی	ु = و	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

यह मज़मून ''कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब''
के सफ़हा 01 ता 38 से लिया गया है।

ईमान पर ख़ातिमा

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह ! जो कोई रिसाला ''**ईमान पर ख़तिमा**'' के 38 सफ़हात पढ़ या सुन ले, मदीनए मुनव्वरह में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए महबूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) में उस का ईमान पर आ़फ़िय्यत के साथ ख़ातिमा फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ के बा'द ह़म्दो सना और **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाले से फ़रमाया : ''दुआ़ मांग, क़बूल की जाएगी, सुवाल कर, दिया जाएगा।'' (سُنَنُ النَّسائی ص ۲۲۰ حدیث ۲۲۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ईमान पर मौत की किसी के पास ज़मानत नहीं

अल्लाहु रह़मान عَزَّوَجَلَّ के करोड़हा करोड़ एह़सान कि उस ने हमें इन्सान बनाया, **मुसल्मान** किया और अपने **ह़बीबे मुकर्रम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामने करम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

हमारे हाथों में दिया। इस में कोई शक नहीं कि हम **मुसल्मान** हैं मगर हम में से किसी के पास इस बात की कोई ज़मानत नहीं कि वोह मरते दम तक **मुसल्मान** ही रहेगा। जिस त़रह़ बे शुमार कुफ़्फ़ार ख़ुश क़िस्मती से मुसल्मान हो जाते हैं उसी त़रह़ मुतअ़द्दिद बद नसीब मुसल्मानों का مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमान से मुन्ह़रिफ़ हो जाना (या'नी फिर जाना) भी साबित है। और जो ईमान से फिर कर या'नी **मुरतद** हो कर मरेगा वोह हमेशा हमेशा के लिये दोज़ख़ में रहेगा। चुनान्चे पारह 2 **सूरतुल बक़रह** आयत नम्बर 217 में फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۱۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे, फिर काफ़िर हो कर मरे, तो उन लोगों का किया अकारत गया दुन्या में और आख़िरत में, और वोह दोज़ख़ वाले हैं, उन्हें उस में हमेशा रहना।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

ईमां पे रब्बे रह़मत, दे दे तू इस्तिक़ामत عَزَّوَجَلَّ
देता हूं वासित़ा मैं तुझ को तेरे नबी का صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

न जाने हमारा ख़ातिमा कैसा हो !

एक त़वील ह़दीसे पाक में नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी इर्शाद फ़रमाया : औलादे आदम मुख़्तलिफ़ त़बक़ात पर पैदा की गई इन में से बा'ज़ **मोमिन** पैदा हुए **ह़ालते ईमान** पर ज़िन्दा रहे और **मोमिन** ही मरेंगे, बा'ज़ **काफ़िर** पैदा हुए **ह़ालते कुफ़्र** पर ज़िन्दा रहे और **काफ़िर** ही मरेंगे, जब कि बा'ज़ **मोमिन** पैदा हुए **मोमिनाना ज़िन्दगी** गुज़ारी और **ह़ालते कुफ़्र** पर रुख़्सत हुए, बा'ज़ **काफ़िर** पैदा हुए, **काफ़िर** ज़िन्दा रहे और **मोमिन** हो कर मरेंगे ।

(سُنَنُ التِّرمذی ج٤ ص ٨١ حدیث ٢١٩٨)

शैत़ान अ़ज़ीज़ों के रूप में ईमान छीनने आएगा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में आने को तो हम आ गए मगर अब दुन्या से **ईमान** को सलामत ले जाने के लिये सख़्त दुश्वार गुज़ार घाटियों से गुज़रना होगा और फिर भी कुछ नहीं मा'लूम कि ख़ातिमा कैसा होगा ! **आह** ! आह ! आह ! मौत के वक़्त ईमान छीनने

के लिये शैत़ान त़रह़ त़रह़ के हथकन्डे इस्ति'माल करेगा ह़त्ता कि मां बाप का रूप धार कर भी **ईमान** पर डाके डालेगा और यहूदो नसारा को दुरुस्त साबित करने की मज़्मूम सई करेगा। यक़ीनन वोह ऐसा नाज़ुक मौक़अ़ होगा कि बस जिस पर **अल्लाहु** रह़मान عَزَّوَجَلَّ का ख़ास करम व एह़सान होगा वोही काम्याब व कामरान होगा और उसी का **ईमान** सलामत रहेगा। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या,** जिल्द 9 सफ़ह़ा 83 पर फ़रमाते हैं कि इमाम इब्नुल ह़ाज मक्की قُدِّسَ سِرُّهٗ **''मदख़ल''** में फ़रमाते हैं कि दमे नज़्अ़ दो शैत़ान, आदमी के दोनों पहलू पर आ कर बैठते हैं एक उस के **बाप** की शक्ल बन कर दूसरा **मां** की। एक कहता है : वोह शख़्स यहूदी हो कर मरा तू (भी) यहूदी हो जा कि यहूद वहां बड़े चैन से हैं। दूसरा कहता है : वोह शख़्स नसरानी (या'नी क्रिस्चेन हो कर दुन्या से) गया तू (भी) नसरानी (क्रिस्चेन) हो जा कि नसारा (क्रिस्चेन) वहां बड़े आराम से हैं।

(المدخل لابن الحاج ج٣ص١٨١)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्हो शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

वाक़ेई मुआ़मला बड़ा नाज़ुक है, बरबादिये ईमान के ख़ौफ़ से ख़ाइफ़ीन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं।

फ़िक्रे मआ़श बद बला होले मआ़द जां गुज़ा
लाखों बला में फंसने को रूह़ बदन में आई क्यूं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

पैदा न होने वाला क़ाबिले रश्क है

ह़दीसे मुबारक में कस्रते उम्मत की तरग़ीब दिलाई गई है और हमारे प्यारे प्यारे आक़ा **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बरोज़े क़ियामत इस उम्मत के कसीर होने पर ख़ुश होंगे और दीगर उम्मतों पर फ़ख़्र करेंगे लिहाज़ा औलाद के ह़ुसूल की ख़्वाहिश में दुन्या व आख़िरत की भलाई पाने के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें करनी चाहिएं लेकिन आज दुन्या में जो बे औलाद होता है वोह उ़मूमन ख़ूब दिल जलाता है और बच्चा पाने के लिये न जाने कैसे कैसे जतन करता है। अगर इस का **मत़्मह़े** नज़र (या'नी मक़्सदे अस्ली) फ़क़त़ घर की ज़ीनत और दुन्या की राह़त है, ह़ुसूले औलाद से मक़्सूद आख़िरत की मन्फ़अ़त की कोई अच्छी निय्यत नहीं, तो ऐसा बे औलाद आदमी ना दानिस्ता त़ौर पर गोया

"किसी" के दुन्या में पैदा होने और फिर बहुत बड़े इम्तिहान में मुब्तला होने की आरज़ू कर रहा है ! मेरी येह बात शायद वोही शख़्स समझ सकता है जो "बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़" में मुब्तला हो। एक ख़ाइफ़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़रमान का ख़ुलासा है : **"मुझे बड़े से बड़े नेक बन्दे पर भी रश्क नहीं आता, जो कि क़ियामत की होल नाकियों का मुशाहदा करेगा, मुझे सिर्फ़ उस पर रश्क आता है जो "कुछ भी" न हो।"** (या'नी पैदा ही न हो) (حِلیَةُ الاولیاء ج۸ ص۹۳ رقم ۱۱۴۷۰ مُلَخَّصاً)

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने **ग़लबए ख़ौफ़** के वक़्त फ़रमाया : **काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता !** (الطَّبقاتُ الکُبریٰ لابنِ سعد ج۳ ص۲۷۴) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता क़ब्रो ह़श्र का सब ग़म ख़त्म हो गया होता

आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

क़ाबिले रश्क वोही है जो क़ब्र के अन्दर मोमिन है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में जीते जी मोमिन होना यक़ीनन बाइसे सआदत है मगर येह सआदत ह़क़ीक़त में उसी सूरत में सआदत है कि दुन्या से रुख़्सत होते वक़्त ईमान सलामत रहे। **ख़ुदा की क़सम ! क़ाबिले रश्क वोही है जो क़ब्र के अन्दर भी मोमिन है।** जी हां जो दुन्या से ईमान सलामत ले जाने में काम्याब हुवा वोही ह़क़ीक़ी मा'नों में काम्याब और जो जन्नत को पा ले वोही बा मुराद है। चुनान्चे पारह 4 सूरए आले इमरान आयत नम्बर 185 में इर्शाद होता है :

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۱۸۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा और दुन्या की ज़िन्दगी तो येही धोके का माल है।

मेरा नाज़ुक बदन जहन्नम से *बहरे ग़ौसो रज़ा बचा या रब* عَزَّوَجَلَّ
कर जवारे रसूल जन्नत में صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *अपने अ़त्तार को अ़ता या रब* عَزَّوَجَلَّ

बुरी सोह़बत ईमान के लिये ख़त़रनाक है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुरी सोह़बत ईमान के लिये बहुत ख़त़रनाक है। **अफ़्सोस** ! सद करोड़ अफ़्सोस ! इस के बा वुजूद हम बुरे दोस्तों से बाज़ नहीं आते, गपशप की बैठकों से ख़ुद को नहीं बचाते, मज़ाक़ मस्ख़रियों, और ग़ैर सन्जीदा ह़रकतों की आ़दतों से पीछा नहीं छुड़ाते। **आह** ! बुरी सोह़बत की नुहूसत ऐसी छाई है कि लम्ह़ा भर के लिये भी तन्हाई में यादे इलाही करने को जी नहीं चाहता। **ईमान की ह़िफ़ाज़त** की अगर्चे चाहत है ताहम इस के लिये बुरे दोस्त छोड़ने बल्कि किसी क़िस्म की क़ुरबानी देने की हिम्मत नहीं। **याद रखिये** ! बुरा दोस्त ईमान के लिये बाइ़से नुक़्सान साबित हो सकता है। हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है उसे येह देखना चाहिये कि किस से दोस्ती करता है।" (مُسند امام احمد ج۳ ص۱۶۹-۱۶۸ حدیث ۸۰۳٤)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

हैं : या'नी किसी से दोस्ताना करने से पहले उसे जांच लो कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) **रसूल** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का मुतीअ़ (या'नी फ़रमां बरदार) है या नहीं रब तआ़ला फ़रमाता है : وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और सच्चों के साथ हो। (پ ۱۱، التوبة:۱۱۹)), सूफ़िया फ़रमाते हैं कि इन्सानी त़बीअ़त में अख़्ज़ या'नी ले लेने की ख़ासिय्यत है। ह़रीस की सोह़बत से ह़िर्स, ज़ाहिद की सोह़बत से ज़ोह्दो तक़्वा मिलेगा। ख़याल रहे कि ख़ुल्लत दिली दोस्ती को कहते हैं जिस से **मह़ब्बत** दिल में दाख़िल हो जावे। येह ज़िक्र दोस्ती व मह़ब्बत का है किसी फ़ासिक़ो फ़ाजिर को अपने पास बिठा कर मुत्तक़ी बना देना तब्लीग़ है। हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने गुनहगारों को अपने पास बुला कर मुत्तक़ियों (या'नी परहेज़ गारों) का सरदार बना दिया। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 599)

आप के क़दमों में गिर कर मौत की या मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
आरज़ू कब आएगी बर बे कसो मजबूर की

ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये अलग थलग रहने वाला

एक शख़्स सब से अलग थलग रहता था। ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू दरदा** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने उस के पास

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

तशरीफ़ ला कर जब इस का सबब दरयाफ़्त किया तो उस ने कहा : "मेरे दिल में येह ख़ौफ़ बैठ गया है कि कहीं ऐसा न हो मेरा ईमान छिन जाए और मुझे इस की ख़बर तक न हो।" (قُوتُ القُلوب ج ١ ص ٤٦٨ مُلَخَّصاً)

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

दिल में हो याद तेरी गोशए तन्हाई हो फिर तो ख़ल्वत में अ़जब अन्जुमन आराई हो

आस्ताने पे तेरे सर हो अजल आई हो और ऐ जाने जहां तू भी तमाशाई हो

ईमान लूटने के लिये छीना झपटी !

आह! न जाने हमारा क्या बनेगा ! **मौत** लम्ह़ा ब लम्ह़ा क़रीब आ रही है, क़ब्र की मन्ज़िल की जानिब बराबर आगे कूच जारी है। तसव्वुर कीजिये कि हम गोया बड़ी एह़तियात़ के साथ **ईमान** को ब ह़िफ़ाज़त सीने से चिमटाए हुए हैं, **एक** त़रफ़ नफ़्से अम्मारा ईमान पर झपट रहा है, तो **दूसरी** त़रफ़ शैत़ान पेंतरे बदल बदल कर वार कर रहा है, **तीसरी** त़रफ़ बद मज़्हब **ईमान** पर कमन्द डालने में मस्रूफ़ हैं तो **चौथी** त़रफ़ से दुन्या की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

बे जा मह़ब्बत ईमान के दर पै है ! या'नी यूं समझिये कि कोई **हाथ** मरोड़ रहा है, कोई **टांग** खींच रहा है, कोई **मुक्के** रसीद कर रहा है, कोई **लातें** उछाल रहा है, हर एक पूरा ज़ोर लगा रहा है कि किसी त़रह़ हम से **ईमान** छीन ले। आह ! इस ह़ालत में **ईमान** की दौलत को सलामत ले कर क़ब्र में कैसे दाख़िल हों !

मह़बूबे ख़ुदा सर पे अजल आ के खड़ी है

शैत़ान से अ़त्तार का ईमान बचा लो

सल्बे ईमान की फ़िक्र में शब भर गिर्या व ज़ारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ईमान छिन जाने के ख़ौफ़ से लरज़ां व तरसां रहा करते थे चुनान्चे **ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं मैं एक दफ़्आ **ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास ह़ाज़िर हुवा। **आप** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **सारी रात रोते रहे।** मैं ने दरयाफ़्त किया : क्या आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه गुनाहों के ख़ौफ़ से रो रहे हैं ? तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक **तिन्का** उठाया और फ़रमाया कि गुनाह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस तिन्के से भी कम हैसिय्यत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

रखते हैं, **मुझे तो इस बात का ख़ौफ़ है कि कहीं ईमान की दौलत न छिन जाए।** (منہاج العابدین ص۱۶۹) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़ता से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

सुब्ह़ मोमिन तो शाम को काफ़िर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रह़मते आ़लम, शहन्शाहे अ़रबो अ़जम, रसूले मुह़तशम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है : "उन फ़ितनों से पहले नेक आ'माल के सिल्सिले में जल्दी करो ! जो तारीक रात के ह़िस्सों की त़रह़ होंगे। **एक आदमी सुब्ह़ को मोमिन होगा और शाम को काफ़िर होगा और शाम को मोमिन होगा और सुब्ह़ काफ़िर होगा।** नीज़ अपने दीन को दुन्यावी साज़ो सामान के बदले फ़रोख़्त कर देगा।" (صحیح مُسلِم حدیث ۱۱۸ ص ۷۳)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

हैं ग़ुलाम आप के जितने करो दूर उन से फ़ितने
बुरी मौत से बचाना मदनी मदीने वाले صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ईमान पर मौत आती हो तो आज और अभी आ जाए !

आह ! आह ! आह ! दिल पर भी तो क़ाबू नहीं, येह भी कभी तोला है तो कभी माशा। अभी जज़्बात कुछ हैं तो चन्द लम्हात के बा'द कुछ होंगे। **काश** ! ईमान की हिफ़ाज़त के जज़्बे पर इस्तिक़ामत मिलती। **सद करोड़ काश** ! आ़फ़िय्यत के साथ ईमान पर मौत की तड़प को दुन्या में आसान ज़िन्दगी गुज़ारने के अरमान पर सब्क़त हासिल हो जाती। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल कर्दा एक बुज़ुर्ग عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى के इर्शाद का ख़ुलासा है : अगर **ईमान पर मौत** मेरे अपने कम्रए ख़ास के दरवाज़े पर मिल रही हो और **शहादत** इमारत के सद्र दरवाज़े (MAIN ENTRANCE) पर मुन्तज़िर हो तो शहादत अगर्चे आ'ला दरजे की सआ़दत है मगर मैं कमरे के दरवाज़े पर मिलने वाली ईमान पर मौत को फ़ौरन क़बूल कर लूंगा कि क्या मा'लूम इमारत के सद्र दरवाज़े तक पहुंचते पहुंचते

मेरा दिल बदल जाए और मैं **ईमान पर मिलने वाली मौत** के शरफ़ से ही मह़रूम हो जाऊं !

(اِحیاءُ العُلوم ج٤ ص ٢١١ مُلَخَّصاً)

मरीज़े मह़ब्बत का दम है लबों पर
सिरहाने अब आ जाओ शाहे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दिल में कभी ईमान तो कभी निफ़ाक़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दिल को "क़ल्ब" इसी लिये कहते हैं कि येह जब देखो मुन्क़लिब हो जाता या'नी बार बार बदलता रहता है, रात को दिल में आता है कि कल से ख़ूब इ़बादतें और रियाज़तें करूंगा मगर सुब्ह़ को येही दिल बदल कर गुनाहों के दलदल में डाल देता है। कभी दिल पर **ख़ौफ़े ख़ुदा** से कपकपी त़ारी हो जाती और आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं तो कभी गुनाहों की ऐसी ज़िद चढ़ जाती है कि अल अमान वल ह़फ़ीज़ । **ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जो कि मुनाफ़िक़ीन और अस्बाबे निफ़ाक़ के इ़ल्म के माहिर थे । आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते : दिल पर कभी तो ऐसी घड़ी आती है कि वोह **ईमान** से भर जाता है ह़त्ता कि उस में सूई की नोक

www.dawateislami.net

जितनी भी **निफ़ाक़** के लिये गुन्जाइश बाक़ी नहीं रहती और कभी उस पर ऐसी घड़ी वारिद होती है कि वोह **मुनाफ़क़त** से पुर हो जाता है और उस में सूई की नोक जितनी जगह भी **ईमान** के लिये बाक़ी नहीं बचती। (اِحیاءُ العلوم ج٤ ص ٢٣١ مُلَخَّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मेरा दिल हो पुर हुब्बे जानां से या रब عَزَّوَجَلَّ बचा हर घड़ी जुर्मो इ़स्यां से या रब عَزَّوَجَلَّ
मैं दुन्या से जिस दम चलूं जां से या रब عَزَّوَجَلَّ न ख़ाली हो दिल मेरा ईमां से या रब عَزَّوَجَلَّ

झूटी ख़ुशामद से दीनदारी जाती रहती है !

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इर्शाद फ़रमाते हैं : **निफ़ाक़** कि ज़बान से दा'वए इस्लाम करना और दिल में इस्लाम से इन्कार, येह भी **ख़ालिस कुफ़्र** है, बल्कि ऐसे लोगों के लिये जहन्नम का सब से नीचे का त़बक़ा है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए अक़्दस में कुछ लोग इस सिफ़त के इस नाम के साथ मश्हूर हुए कि उन के

कुफ़्रे बातिनी पर कुरआन नातिक़ हुवा, नीज़ नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने वसीअ़ इ़ल्म से एक एक को पहचाना और फ़रमा दिया कि येह **मुनाफ़िक़** है। अब इस ज़माने में किसी ख़ास शख़्स की निस्बत, क़त्अ़ के साथ (या'नी यक़ीनी तौ़र पर) **मुनाफ़िक़** नहीं कहा जा सकता, कि हमारे सामने जो दा'वए इस्लाम करे हम उस को मुसल्मान ही समझेंगे, जब तक उस से वोह क़ौल या फ़े'ल जो मुनाफ़िये ईमान (या'नी ईमान के ख़िलाफ़) है न सादिर हो। (बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 96) मुनाफ़क़त की दूसरी क़िस्म **निफ़ाक़े अ़मली** है। इस का मत़लब येह होता है कि वोह काम करे जो मुसल्मानों के शायाने शान न हो मुनाफ़िक़ीन के करतूत हों जैसा कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, नबिय्ये मुह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं : ﴾1﴿ जब बात करे तो झूट बोले ﴾2﴿ जब वा'दा करे तो वा'दा ख़िलाफ़ी करे और ﴾3﴿ जब उस के पास अमानत रखी जाए तो उस में ख़ियानत करे।

(صَحِيحُ البُخارِيّ ج١ ص ٢٤ حديث ٣٣)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मौत किसी भी लम्ह़े आ सकती है, और येह किस क़दर तश्वीश की बात है कि अगर मौत उस लम्ह़े आई जिस लम्ह़े दिल **ईमान** से ख़ाली और **निफ़ाक़** से भरपूर हुवा तो ज़रा सोचिये तो सही हमारा क्या होगा **अफ़्सोस !** अक्सर हमारा ह़ाल येह होता है कि दिल में कुछ और ज़बान पर कुछ, दिल के अन्दर मुख़ात़ब (या'नी जिस से बात की जाए उस) के बारे में बुग़्ज़ के बिच्छू भरे होते हैं मगर उस के सामने ख़ुशामदाना अन्दाज़ में उस की ता'रीफ़ के पुल बांधते चले जाते हैं, यक़ीनन येह अ़मली मुनाफ़क़त है जो कि **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी की सूरत में ईमान के लिये सख़्त नुक़्सान देह साबित हो सकती है। चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़रमान का ख़ुलासा है : बा'ज़ अवक़ात एक शख़्स जब घर से निकलता है तो **दीनदार** होता है मगर जब घर लौटता है तो **दीनदार** नहीं होता। इस की वज्ह येह है कि वोह मिलने जुलने वालों की ख़्वाह म ख़्वाह ता'रीफ़ें करता है ह़ालां कि जिस की ता'रीफ़ कर रहा है वोह शख़्स मज़म्मत का मुस्तह़िक़ होता है मगर इस (ता'रीफ़ करने वाले) शख़्स की ज़बान और दिल में इख़्तिलाफ़ होता है। (قُوتُ القُلوب ج۱ ص ٤٧١ مُلَخَّصاً)

www.dawateislami.net

ख़ुशामद के आ़दियों के लिये बस इ़ब्रत ही इ़ब्रत है, सच येही है कि ज़ियादा बोलने में फंसना ही फंसना है। या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ हमें इख़्लास की दौलत और ज़बान के क़ुफ़्ले मदीना की ने'मत से नवाज़ दे।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो عَزَّوَجَلَّ
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى الله تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

जिस को बरबादिये ईमान का ख़ौफ़ न होगा...

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काश ! ईमान की सलामती की मदनी सोच नसीब हो जाए, **सद करोड़ काश !** हर वक़्त बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से दिल घबराता रहे, दिन में बार बार तौबा व इस्तिग़्फ़ार का सिल्सिला रहे। **अल्लाहु** ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ के दरबारे करम बार से **ईमान की ह़िफ़ाज़त** की भीक मांगने की रट जारी रहे। तश्वीश और सख़्त तश्वीश की बात येह है कि जिस त़रह़ दुन्यवी दौलत की ह़िफ़ाज़त के मुआ़मले में ग़फ़्लत उस के ज़ियाअ़ (या'नी ज़ाएअ़ होने) का सबब बन सकती है इसी त़रह़ बल्कि इस से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

भी ज़ियादा सख़्त मुआ़मला **ईमान** का है। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" सफ़ह़ा 495 पर मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن का इर्शाद है : उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : "**जिस को सल्बे ईमान का ख़ौफ़ न हो नज़्अ़ के वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाने का शदीद ख़त़रा है।**"

ज़िन्दगी और मौत की है या इलाही (عَزَّوَجَلَّ) कश्मकश
जां चले तेरी रिज़ा पर बे कसो मजबूर की

एक "ग़लत़ लफ़्ज़" भी जहन्नम में झोंक सकता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अच्छी सोह़बतें कमयाब हो गईं ! ज़बान की अ़दमे ह़िफ़ाज़त का दौर दौरा हो गया ! हमारी अक्सरिय्यत की ह़ालत येह हो गई है कि जो मुंह में आया बक दिया ! अफ़्सोस ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशी और नाख़ुशी का एह़सास कम हो गया। ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ की अहम्मिय्यत के तअ़ल्लुक़ से एक इ़ब्रत अंगेज़ ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

फ़रमाइये। चुनान्चे **सरकारे मदीना**, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है : बन्दा कभी **अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी** की बात कहता है और उस की त़रफ़ तवज्जोह भी नहीं करता (या'नी बा'ज़ बातें इन्सान के नज़्दीक निहायत मा'मूली होती हैं) **अल्लाह** तआ़ला उस (बात) की वज्ह से उस के बहुत से दरजे बुलन्द करता है। और कभी **अल्लाह पाक की नाराज़गी** की बात करता है और उस का ख़याल भी नहीं करता इस (बात) की वज्ह से **जहन्नम** में गिरता है। (بُخاری ج٤ ص٢٤١ حدیث ٦٤٧٨) और एक रिवायत में है कि मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान में जो फ़ासिला है उस से भी ज़ियादा फ़ासिले पर **जहन्नम** में गिरता है।

(مُسنَد اِمام احمد ج٣ ص٣١٩ حدیث ٨٩٣١)

बक बक की कहीं लत न जहन्नम में गिरा दे
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़बां का हो अ़ता क़ुफ़्ले मदीना

हाथ में आग की चिंगारी

आज कल ह़ालात ना गुफ़्ता बिह हैं, दुन्या की मह़ब्बत अक्सर के दिल पर ग़ालिब है, **ईमान की ह़िफ़ाज़त**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

का ज़ेह्न कम हो गया ! **ईमान** बचाना भी ज़रूरी है मगर इस के लिये कोशिश करने का कोई ख़ास जज़्बा नहीं, **ईमान** को संभालना और अह़कामे इस्लाम की पैरवी करना नफ़्से बदकार पर एक अम्रे दुश्वार है। **मेरे आक़ाए नामदार**, मदीने के ताजदार, नबियों के सरदार, सरकारे वाला तबार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, शफ़ीए रोज़े शुमार, मह़बूबे परवर्दगार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आएगा कि उस वक़्त लोगों के दरमियान अपने **दीन पर सब्र** करने वाला, **आग की चिंगारी** पकड़ने वाले की त़रह़ होगा।"

(سُنَنُ التِّرمذی ج ٤ ص ١١٥ حدیث ٢٢٦٧)

गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही عَزَّوَجَلَّ
बना दे मुझे नेक, नेकों का सदक़ा गुनाहों से हर दम बचा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

सुन्नत का तर्क कहीं कुफ़्र तक न पहुंचा दे !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद सहल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ख़ौफ़ का आ'ला दरजा येह है कि अपने बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **इल्मे अज़ली**

के तअ़ल्लुक़ से डरता रहे (कि न जाने मेरे बारे में क्या तै है, आया अच्छा ख़ातिमा या कि बुरा ख़ातिमा !) और इस बात से भी ख़ौफ़ज़दा रहे कि कहीं कोई काम **ख़िलाफ़े सुन्नत** (या'नी सुन्नत को मिटाने वाली बुरी बिद्अ़त का इरतिकाब) न कर बैठे जिस की नुहूसत उसे **कुफ़्र** तक पहुंचा दे। (قُوتُ القلوب ج١ ص ٤٦٧)

दुन्या में हर आफ़त से बचाना मौला عَزَّوَجَلَّ
उ़क़्बा में न कुछ रन्ज दिखाना मौला عَزَّوَجَلَّ
बैठूं जो दरे पाके पयम्बर के हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
ईमान पे उस वक़्त उठाना मौला عَزَّوَجَلَّ

गुनाह करने से दिल काला हो जाता है

आह! गुनाहों का सिल्सिला रुकने का नाम नहीं लेता, मा'सियत की मुसीबत जान नहीं छोड़ती, **अफ़्सोस** ! गुनाहों की आ़दत ने कुछ ऐसा ढीट बना छोड़ा है कि गुनाह करने से दिल भी क़त्अ़न नहीं लरज़ता, **हाए** ! **हाए** ! गुनाहों की कसरत की नुहूसत कहीं बरबादिये ईमान का सबब न बन जाए ! गुनाहों के आ़दियों को ख़बरदार करते हुए हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى **सालिह़ीन** رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का इर्शादे आ़ली नक़्ल फ़रमाते हैं : ''बेशक

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

गुनाह करने से **दिल काला** हो जाता है, और दिल की सियाही की अ़लामत व पहचान येह है कि गुनाहों से घबराहट नहीं होती, इत़ाअ़त की सआ़दत नहीं मिलती और नसीह़त असर नहीं करती। **ऐ अ़ज़ीज़** ! तुम किसी भी गुनाह को मा'मूली मत समझो और कबीरा गुनाहों पर इस्रार करने के बा वुजूद अपने आप को तौबा करने वाला गुमान न करो।" (منہاج العابدین ص ۳۵)

कर के तौबा मैं फिर गुनाहों में हो ही जाता हूं मुब्तला या रब عَزَّوَجَلَّ
नीम जां कर दिया गुनाहों ने मर्ज़े इस्यां से दे शिफ़ा या रब عَزَّوَجَلَّ

मरने के बा'द नौ जवान बूढ़ा हो गया !!!

हाए ! हमारा येह नाज़ुक बदन तो न गर्मी सह सकता है न ही सर्दी। अगर مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ ईमान बरबाद हो गया तो येह अ़ज़ाबे नार कैसे बरदाश्त कर सकेगा ! **आह** ! जहन्नम की होलनाकियां !! ह़ज़रते सय्यिदुना हश्शाम बिन ह़स्सान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **मेरा एक बेटा जवानी की ह़ालत में फ़ौत हो गया** । बा'द अज़ वफ़ात मैं ने उसे ख़्वाब में देखा कि **बूढ़ा** हो चुका है। मैं ने पूछा : **ऐ बेटे** ! तू बूढ़ा किस त़रह़ हो गया ? तो उस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

ने जवाब दिया : जब फुलां शख़्स मरने के बा'द दुन्या से हमारे पास पहुंचा तो **दोज़ख़ ने उसे देख कर एक सांस ली जिस की वज्ह से हम सब एक पल में बूढ़े हो गए !** نَعُوْذُ بِاللّٰهِ الرَّحِيْمِ مِنَ الْعَذَابِ الْاَلِيْم या'नी हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो कि बड़ा मेहरबान है उस की पनाह मांगते हैं दर्दनाक अ़ज़ाब से। (منہاج العابدین ص١٦٧)

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ !
अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ !

जो मोमिन है वोह ख़ुदा से डरे

अल्लाह तबारक व तआ़ला पारह 4 **सूरए आले इमरान** आयत नम्बर 175 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾
(پ ٤ اٰلِ عمران ١٧٥)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मुझ से डरो अगर ईमान रखते हो।

काश ! ख़ौफ़े ख़ुदा नसीब हो जाए

ऐ काश ! इस आयते मुक़द्दसा के सदक़े ग़फ़्लत का पर्दा चाक हो जाए और उम्मीदे रह़मत के साथ साथ हमें

सह़ीह़ मा'नों में **ख़ौफ़े ख़ुदा** भी मुयस्सर आ जाए, दुन्या की बे सबाती का ह़क़ीक़ी मा'नों में एह़सास हो जाए, काश ! काश ! काश ! **बुरे ख़ातिमे** का डर दिल में घर कर जाए, अपने **परवर्दगार** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गियों का हर दम धड़का लगा रहे, नज़्अ़ की सख़्तियों, मौत की तल्ख़ियों, अपने ग़ुस्ले मय्यित व तक्फ़ीन व तदफ़ीन की कैफ़िय्यतों, क़ब्र की अंधेरियों और वह़्शतों, मुन्कर व नकीर के सुवालों, क़ब्र के अ़ज़ाबों, मह़शर की गर्मियों और घबराहटों, पुल सिरात़ की दह़्शतों, बारगाहे इलाही की पेशियों, मैदाने क़ियामत में छोटी छोटी बातों की भी पुरसिशों और सब के सामने ऐ़ब खुलने की रुस्वाइयों, जहन्नम की ख़ौफ़नाक चिंघाड़ों, दोज़ख़ की होलनाक सज़ाओं और अपने नाज़ों के पले बदन की नज़ाकतों, **जन्नत** की अ़ज़ीम ने'मतों से मह़रूमियों वग़ैरा वग़ैरा का ख़ौफ़ हमें बेचैन करता रहे। और **ऐ काश !** येह ख़ौफ़ हमारे लिये हिदायत व रह़मत का ज़रीआ़ बन जाए जैसा कि पारह 9 **सूरतुल आ'राफ़** आयत नम्बर 154 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿۱۵۴﴾

(پ۹ الاعراف ۱۵٤)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हिदायत और रह़मत है उन के लिये जो अपने रब से डरते हैं।

ज़माने का डर मेरे दिल से मिटा कर तू कर ख़ौफ़ अपना अ़ता या इलाही عَزَّوَجَلَّ

तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा मैं थरथर रहूं कांपता या इलाही عَزَّوَجَلَّ

ख़ौफ़े ख़ुदा से क्या मुराद है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ''**ख़ौफ़े ख़ुदा**'' से मुराद येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर, उस की बे नियाज़ी, उस की नाराज़गी, उस की गिरिफ़्त (पकड़), उस की त़रफ़ से दिये जाने वाले अ़ज़ाबों उस के ग़ज़ब और इस के नतीजे में ईमान की बरबादी वग़ैरा से ख़ौफ़ज़दा रहने का नाम **ख़ौफ़े ख़ुदा** है। ऐ काश ! हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में **ख़ौफ़े ख़ुदा** नसीब हो जाए। आह ! आह ! आह ! हम तो अपने ख़ातिमे के बारे में **अल्लाहु क़दीर** عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** जानते हैं न कभी जीते जी जान सकेंगे। ज़बाने रिसालत से **जन्नत** की बिशारत की अ़ज़ीम सआ़दत से बहरा मन्द क़त़्ई जन्नती हस्तियों के **ख़ौफ़े ख़ुदा** की बातें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

जब पढ़ते सुनते हैं तो अपनी ग़फ़्लत पर वाक़ेई ह़सरत होती है। चुनान्चे पढ़िये और कुढ़िये :

सात सह़ाबा के रिक़्क़त अंगेज़ कलिमात

《1》 **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक बार परिन्दे को देख कर फ़रमाया : "**ऐ परिन्दे** ! काश ! मैं तुम्हारी त़रह़ होता और मुझे इन्सान न बनाया जाता" 《2》 ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है : "काश ! मैं एक **दरख़्त** होता जिस को काट दिया जाता" 《3》 **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते : "मैं इस बात को पसन्द करता हूं कि मुझे वफ़ात के बा'द उठाया न जाए" 《4,5》 ह़ज़रते सय्यिदुना **त़ल्ह़ा** और ह़ज़रते सय्यिदुना **ज़ुबैर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाया करते : "काश ! हम पैदा ही न हुए होते" 《6》 उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना **आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाया करतीं : "काश ! मैं नस्यम मन्सिय्यन (या'नी कोई भूली बिसरी चीज़)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्हो शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مجمع الزوائد)

होती'' ﴾7﴿ हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते : ''काश ! मैं **राख** होता।'' (قُوتُ القُلوب ج۱ ص ٤٥٩ ـ ٤٦٠ مُلَخَّصا) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم
صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

काश ! ऐसा हो जाता ख़ाक बन के त़यबा की
मुस्त़फ़ा के क़दमों से मैं लिपट गया होता

फूल बन गया होता गुलशने मदीना का
काश ! उन के सह़रा का ख़ार बन गया होता

मैं बजाए इन्सां के कोई पौदा होता या
नख़्ल बन के त़यबा के बाग़ में खड़ा होता

गुलशने मदीना का काश ! होता मैं सब्ज़ा
या बत़ौरे तिन्का ही मैं वहां पड़ा होता

जां कनी की तक्लीफ़ें ज़ब्ह़ से हैं बढ़ कर काश !
मुर्ग़ बन के त़यबा में ज़ब्ह़ हो गया होता

आह ! कस्रते इस्यां हाए ! ख़ौफ़ दोज़ख़ का
काश ! इस जहां का मैं न बशर बना होता

शोर उठा येह मह़शर में ख़ुल्द में गया अ़त्तार
गर न वोह बचाते तो नार में गया होता

अ़वामी बैठकों से दूर रहने में आ़फ़िय्यत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माह़ोल बद से बदतर होता जा रहा है, ज़बानों की लगामें अक्सर ढीली हो चुकी हैं, सुन्नी उ़लमा की सोह़बतों से मह़रूम, **मदनी माह़ोल** से दूर, ग़ैर सन्जीदा नौ जवानों बल्कि

इसी त़रह़ के बकबक झकझक करने वाले बड़बड़िये बड़े बूढ़ों की फ़ुज़ूल बैठकों से ह़स्सास शख़्स बहुत घबराता है, क्यूं कि ऐसी जगहों पर ज़बानें क़ैंचियों की त़रह़ चल रही होती हैं, مَعَاذَ الله बसा अवक़ात **कुफ़्रिय्या कलिमात** भी बक दिये जाते हैं। ऐसी मजलिसों में बरबादिये ईमान का सख़्त ख़त़रा रहता है। नेकी की दा'वत देने या किसी सख़्त ह़ाजत पड़ने पर शरई इजाज़त मिलने पर ह़स्बे ज़रूरत शिर्कत करने के इलावा ऐसी मह़फ़िलों से दूर रहना बेह़द ज़रूरी है।

तू दोज़ख़ से हम को बचा या इलाही عَزَّوَجَلَّ दे फ़िरदौस बहरे रज़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ
बुरी सोह़बतों से बचा या इलाही عَزَّوَجَلَّ तू कर दोस्त अच्छे अ़त़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ
तू ईमां पे मुझ को उठा या इलाही عَزَّوَجَلَّ
जहन्नम से कर दे रिहा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

तश्वीश सख़्त तश्वीश की बात येह है कि ज़रूरिय्याते दीन में से किसी ज़रूरते दीनी का इन्कार यूंही जो फ़े'ल मुनाफ़िये ईमान (या'नी ईमान की ज़िद) **है मसलन बुत या चांद सूरज को सज्दा करना ऐसा क़त़्ई कुफ़्र है कि इस में जहालत भी उ़ज़्र नहीं या'नी इस का कुफ़्र होना मा'लूम हो या न हो दोनों ही**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

सूरतों में कुफ़्र है। चुनान्चे अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **उ़म्दतुल क़ारी** में इर्शाद फ़रमाते हैं : "हर उस इन्सान की **तक्फ़ीर** की जाएगी (या'नी उस को काफ़िर क़रार दिया जाएगा) जो **सरीह़ कलिमए कुफ़्र** मुंह से निकाले या फिर ऐसा फ़े'ल करे जो **कुफ़्र** का बाइ़स हो अगर्चे वोह येह जानता न हो कि येह कलिमा या फ़े'ल **कुफ़्र** है।" (عمدةُ القارى ج١ ص٤٠٣)

अफ़्सोस ! कुफ़्रिय्यात की मा'लूमात नहीं

अफ़्सोस ! हमारी ग़ालिब अक्सरिय्यत को **कुफ़्रिय्या कलिमात** की कमा ह़क़्क़ुहू मा'लूमात भी नहीं। हर एक को अपने बारे में येह ख़ौफ़ रखना चाहिये कि कहीं ऐसा न हो कि मुझ से कोई ऐसा क़ौल या फ़े'ल सादिर हो जाए जिस के सबब مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ ईमान बरबाद हो जाए और किया कराया सब अकारत जाए, और مَعَاذَ الله ثُمَّ مَعَاذَ الله **कुफ़्र** ही पर दुन्या से सफ़र हो जाए और फिर हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम मुक़द्दर हो जाए।

कुफ़्रिय्या कलिमात आ़म होने के बा'ज़ अस्बाब

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल फ़िल्मों ड्रामों, फ़िल्मी गानों, अख़्बारी मज़्मूनों, जिन्सी व रूमानी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

नॉविलों, इश्क़िया व फ़िस्क़िया अफ़्सानों, बच्चों की बेहूदा कहानियों, त़रह़ त़रह़ के बे तुके हफ़्त रोज़ों, ह़या सोज़ माहनामों और मुख़र्रिबे अख़्लाक़ डाइजस्टों और मिज़ाह़िया चुटकुलों की केसिटों वग़ैरा के ज़रीए **कुफ़्रिय्या कलिमात** आ़म होते जा रहे हैं।

कुफ़्रिय्या कलिमात के मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है

याद रखिये ! **कुफ़्रिय्या कलिमात** के मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म ह़ासिल करना **फ़र्ज़** है। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 23 सफ़ह़ा 624 पर फ़रमाते हैं : **मुह़र्रमाते बात़िनिय्या** (या'नी बात़िनी मम्नूआ़त मसलन) **तकब्बुर व रिया व उ़ज्ब** (या'नी ख़ुद पसन्दी) **व ह़सद वग़ैरहा और उन के मुआ़लजात** (या'नी इ़लाज) **कि इन का इ़ल्म भी हर मुसल्मान पर अहम फ़राइज़ से है।**[1] मज़ीद

(1) एह़याउल उ़लूम जिल्द 3 में मुतअ़द्दद बात़िनी अमराज़ का बयान किया गया है, इस का बग़ौर मुत़ालआ़ करना नीज़ मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुनना, मदनी रसाइल पढ़ना और दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना भी इन फ़र्ज़ उ़लूम को सीखने के ज़राएअ़ हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

सफ़्हा 626 पर **फ़तावा शामी** के ह़वाले से फ़रमाते हैं : **ह़राम अल्फ़ाज़ और कुफ़्रिय्या कलिमात के मुतअ़ल्लिक़ इल्म सीखना फ़र्ज़ है, इस ज़माने में येह सब से ज़रूरी उमूर हैं।** (رَدُّالْمُحتار ج۱ ص۱۰۷)

कुफ़्रिय्या कलिमात से मुतअ़ल्लिक़ अहम ज़ाबिता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ौल का कुफ़्र होना और बात और क़ाइल (या'नी कहने वाले) को **काफ़िर** मान लेना और बात है। **कुफ़्रे लुज़ूमी** (जिसे फ़िक़्ही कुफ़्र भी कहते हैं) के मुर्तकिब को भी अगर्चे फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام **काफ़िर** कहते हैं। मगर उ़लमाए मुतकल्लिमीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن कुफ़्रे लुज़ूमी वाले की तक्फ़ीर नहीं करते। **"कुफ़्रे इल्तिज़ामी** (की ता'रीफ़) **येह** (बयान की गई है) **कि ज़रूरिय्याते दीन से किसी शै का तस्रीह़न** (या'नी साफ़ साफ़) **ख़िलाफ़ करे येह क़त़्अ़न इज्माअ़न** (या'नी सब के नज़्दीक) **कुफ़्र है।"** उ़लमाए मुतकल्लिमीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का त़रीक़ा ही ज़ियादा मोह़तात़ है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 15 में **कुफ़्रिय्या**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

कलिमात पर **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का फ़तवाए कुफ़्र ज़िक्र करने के बा'द आगे चल कर सफ़हा 445 पर फ़रमाते हैं : "अगर्चे अइम्मए मुह़क़्क़िक़ीन व उ़लमाए मोह़तात़ीन उन्हें **काफ़िर** न कहें और येही सवाब (या'नी सह़ीह़) है هُوَالْجَوَابُ وَبِهٖ يُفْتٰى وَعَلَيْهِ الْفَتْوٰى وَهُوَ الْمَذْهَبُ وَعَلَيْهِ الْاِعْتِمَادُ وَفِيْهِ السَّلَامَةُ وَفِيْهِ السَّدَادُ या'नी "येही जवाब है, इसी के साथ **फ़तवा** दिया जाता है, इसी पर **फ़तवा** है, येही मज़्हब है, इसी पर ए'तिमाद है, इसी में सलामती है और येही दुरुस्त है।" लिहाज़ा **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! अगर आप को किसी मुसल्मान का क़ौल या फ़े'ल ब ज़ाहिर कुफ़्र नज़र आए तब भी जज़्बात में आ कर मह़्ज़ अपनी अट्कल से उस को **काफ़िर व मुरतद** न ठहराएं, मुफ़्तियाने अहले सुन्नत की ख़िदमत में रुजूअ़ लाएं, वोह जिस त़रह़ फ़रमाएं उसी को अ़मली जामा पहनाएं।

बिग़ैर इ़ल्म के दीनी बह़सें करने वालो ख़बरदार !

दीन के मुतअ़ल्लिक़ जो बात यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम हो वोही बयान करनी चाहिये, ज़ियादा **अ़क़्ल के घोड़े** दौड़ाना ईमानिय्यात के मुआ़मले में इन्तिहाई ख़त़रनाक होता है कि ठोकर लगने पर आदमी बसा अवक़ात

कुफ़्रिय्यात की गहरी खाई में जा पड़ता है और उसे इस बात का पता तक नहीं चलता कि उस का ईमान बरबाद हो चुका है ! चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 24 सफ़ह़ा 159 ता 160 पर फ़रमाते हैं : इमाम **हुज्जतुल इस्लाम** मुह़म्मद ग़ज़ाली फिर अ़ल्लामा मनावी शारेह़े जामेअ़ सग़ीर फिर सय्यिदी अ़ब्दुल ग़नी नाबलुसी **ह़दीक़ा** में फ़रमाते हैं : "कोई आदमी बदकारी और चोरी करे तो बा वुजूद गुनाह होने के उस के लिये येह अ़मल इतना मोहलिक (हलाक ख़ैज़) और तबाह कुन नहीं जितना बिला तह़क़ीक़ इल्मे इलाही के बारे में कलाम करना मोहलिक (या'नी हलाक करने वाला) है क्यूं कि बिला तह़क़ीक़ और बिग़ैर **पुख़्तगिये इल्म** के कहीं वोह **कुफ़्र** का मुर्तकिब हो जाएगा और उसे इल्म भी नहीं होगा ! इस की मिसाल ऐसे ही है जैसे तैरना जाने बिग़ैर दरिया की मौजों और लहरों पर सुवार होने के, और शैत़ान की फ़रेब कारियां जो अ़क़ाइद और मज़ाहिब से तअ़ल्लुक़ रखती हैं कोई ढकी छुपी नहीं हैं। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब कुछ ख़ूब जानता है।"

(اَلْحَدِيقَةُ النَّدِيَّة ج ٢ ص ٢٧٠)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की फ़रमाइश

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलहाज **मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़** अ़त्तारी मदनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى की फ़रमाइश और उन्हीं के तआ़वुन से उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त **"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"** का काम शुरूअ़ हुवा था, फिर इस में त़वील वक़्फ़ा आ गया। येह काम दुश्वार ही नहीं दुश्वार तरीन था, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने कभी कभी मा'मूली सा क़लम तो चलाया है मगर ज़िन्दगी में कभी इतने नाज़ुक और कठिन मौज़ूअ़ पर क़लम उठाने की जुर्अत नहीं की थी, बहर कैफ़ **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इआ़नत और नबिय्ये रह़मत की ह़िमायत के भरोसे हिम्मत कर के दोबारा काम शुरूअ़ किया और बिल आख़िर चन्द बे रब्त़ फ़िक़रात तरतीब देने में काम्याबी ह़ासिल हुई। ग़ालिबन इस उ़न्वान पर उर्दू ज़बान में इस त़रह़ की कोई किताब इस से पहले कभी मन्ज़रे आ़म पर नहीं आई। अन्दाज़ ह़त्तल इम्कान आसान रखा है, कहीं कहीं क़स्दन मुश्किल अल्फ़ाज़ लिख कर ए'राब लगा कर सवाबे आख़िरत की निय्यत से हिलालैन में उन के मा'ना भी

लिख दिये हैं ताकि इस्लामी भाइयों को दीगर दीनी कुतुब के मुत़ालए में सहूलत हो कि हर किताब में इस त़रह़ का अन्दाज़ नहीं होता मगर मैं ने इस किताब में कहीं भी फ़क़त़ अपनी राए से कोई हुक्मे शरई क़ाइम नहीं किया। दीगर कुतुब के साथ साथ बिल ख़ुसूस **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** से ख़ूब ख़ूब रहनुमाई ह़ासिल की है और फिर दा'वते इस्लामी की मदनी मजलिस **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** के **उ़लमाए किराम** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से तख़्रीज व नज़रे सानी करवाई है। नीज़ **मुफ़्तियाने अहले सुन्नत** كَثَّرَهُمُ اللهُ تَعَالٰى (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसों की कसरत फ़रमाए। आमीन) ने इस किताब को **बिल इस्तीआ़ब** (या'नी अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा) पढ़ा / सुना है और तफ़्तीश फ़रमाई है और इन ह़ज़रात की इजाज़त मिलने पर ही इस की इशाअ़त की गई है।

सरसरी देखने और सीखने का फ़र्क़

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इनायात और उ़लमाए अहले सुन्नत की नवाज़िशात से आयिन्दा सफ़ह़ात में **कुफ़्रिय्या कलिमात** की सुवालन जवाबन मुख़्तसर सी मा'लूमात फ़राहम करने की सई की गई

www.dawateislami.net

है जो कि कलिमाते कुफ़्र का **फ़र्ज़ इल्म** ह़ासिल करने में मददगार साबित हो सकती है। "सरसरी नज़र दौड़ा लेने" और "सीखने" के फ़र्क़ को हर त़ालिबे इल्म ख़ूब जानता है। लिहाज़ा ख़ुद को "त़ालिबे इल्म" तसव्वुर करते हुए ब मुत़ाबिक़ इस **मक़ूला :** اَلسَّبَقُ حَرْفٌ وَّالتَّكْرَارُ اَلْفٌ या'नी "सबक़ (अगर्चे) एक ह़र्फ़ हो (मगर उस को याद करने के लिये उस की) तक्रार एक हज़ार बार होनी चाहिये।" इस किताब में दिये हुए मज़ामीन को ह़त्तल इम्कान "सीखने" की कोशिश कीजिये। अगर आप ख़ास ख़ास बातों को ज़ेह्न नशीन करने में काम्याब हो गए तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ इस की बरकतें ख़ुद ही देख लेंगे।

किताबों की अग़लात़ दुरुस्त करवाने का त़रीक़ा

अगर इस किताब की कोई बात समझ में न आए तो मुफ़्तियाने अहले सुन्नत से रुजूअ़ फ़रमाएं, अगर इस किताब में कहीं ग़लत़ी पाएं तो तह़रीरी त़ौर पर मअ़ नाम व पता व फ़ोन नम्बर मुत्तलअ़ फ़रमा कर ख़ुद को सवाब का ह़क़दार बनाएं। नाम व पता व फ़ोन नम्बर यूं भी ज़रूरी होता है कि अगर पढ़ने वाले को ग़लत़

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

फ़हमी हुई हो तो दूर करने की सई की जा सकती है। येह हमेशा याद रखिये ! कि ज़बानी निशान देही करने या किसी के ज़रीए कहलवा देने से किताबों की ग़लतियों की इस्लाह मुश्किल होती है।

दुआए अ़त्तार

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हर त़रह़ के कुफ़्र से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा ! **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारा ईमान सलामत रखना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें ईमानो आ़फ़िय्यत के साथ मदीनए मुनव्वरह में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस किताब **''कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब''** को लिखने, पढ़ने, तक़्सीम करने और हर त़रह़ की मुआ़वनत करने वालों को दोनों जहान की भलाइयों से मालामाल फ़रमा।

कुफ़्रिया बात अदा न हो लब से ऐसा मोह़तात़ दे बना या रब عَزَّوَجَلَّ
मेरा ईमां सदा रहे मह़फ़ूज़ सारे नबियों का वासित़ा या रब عَزَّوَجَلَّ

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

अल्लाह

"ज़बानी कलामी इश्क़े

रसूल के दा'वे के बजाए काश !

हमारा किरदार इश्क़े रसूल के अन्वार

बिखेर रहा हो !"

अल मदीना

अल बक़ीअ़

17 मुह़र्रमुल ह़राम 1437 हि.

www.dawateislami.net

लाखों सलाम तुम पर

महबूबे रब्बे अकरम ! लाखों सलाम तुम पर
लाखों दुरूद हर दम लाखों सलाम तुम पर
तुम हाकिमे ज़मां हो, सुल्ताने दो जहां हो
ऐ सरवरे मुअ़ज़्ज़म लाखों सलाम तुम पर
प्यारे नबी ! शफ़ाअ़त, की भीक हो इनायत
रह़मत हो जाने आ़लम लाखों सलाम तुम पर
दिल में तुम्हारी उल्फ़त, है दे दो इस में बरकत
हरगिज़ न हो कभी कम, लाखों सलाम तुम पर
ऐ वालिये मदीना बुलवाइये मदीना
काश आ के येह पढ़ें हम लाखों सलाम तुम पर
या मुस्त़फ़ा ! करम हो जिस दम लबों पे दम हो
कलिमा पढ़ूं मैं उस दम लाखों सलाम तुम पर
सरकार ! हो इनायत दीदार हो इनायत
जल्वों पे मर मिटें हम लाखों सलाम तुम पर
इश्क़ अपना दे दो मुझ को उन के तुफ़ैल में जो
मेरे हैं ग़ौसे आ'ज़म लाखों सलाम तुम पर
शैत़ानो नफ़्स हाए ! बरबाद करने आए
फ़रियाद ! शाहे आ़लम ! लाखों सलाम तुम पर
रन्जो अलम ने मारा लिल्लाह दो सहारा
आक़ा ! शफ़ीए़ आ'ज़म लाखों सलाम तुम पर
दुन्या के ग़म मिटा दो, उ़क़्बा के ग़म मिटा दो
कर दो ग़मों से बे ग़म लाखों सलाम तुम पर
मुरझाया दिल खिल उठे दे दो रज़ा के सदक़े
दागे़ जिगर का मरहम लाखों सलाम तुम पर
रह़मत हो या नबी अब हों ख़त्म नफ़्रतें सब
सुन्नी हों सब मुनज़्ज़म लाखों सलाम तुम पर

अ़त्तार को ख़ुदा ने, बख़्शा तुम्हारे सदक़े
था लाइक़े जहन्नम लाखों सलाम तुम पर

– अल मौत –

1, रजब 1441 सि.हि.
26-02-2020

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शहादत मिलने का आसान त़रीक़ा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो सिद्क़े दिल से अल्लाह पाक से शहादत मांगता है तो अल्लाह पाक उस को शुहदा का मर्तबा अ़त़ा फ़रमा देता है ख़्वाह वोह अपने बिस्तर ही पर मरे ।

(مسلم، ص۱۰۵۷، حدیث ۱۹۰۹)

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372

Faizane Madina, Teen koniya Baghicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi

011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply

feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net